ISSN:2583-8849



बुनियाद हुसैन 'ज़हीन'
बीकानेर, राजस्थान

1

जैसा तू है ख़ुद को वैसा कर लें क्या
पाकीज़ा दिल को भी गंदा कर लें क्या

बे- ग़ैरत से प्यार का सौदा कर लें क्या
ऐसा होता हो तो ऐसा कर लें क्या

तेरे साथ रहें तुझको बर्दाश्त करें
समझौते पर फिर समझौता कर लें क्या

ग़म और ख़ुशियाँ सिक्के के दो पहलू हैं
रो- रो के आंखों को अंधा कर लें क्या

कड़वी यादों से तो ग़फ़लत बेहतर है
नाम तेरा लेकर मुंह खारा कर लें क्या

बरसों बाद मिले और मैले मन के साथ
तुम से फिर मिलने का वादा कर लें क्या

हल्की सी मुस्कान जो तेरे लब पर है
इस सौग़ात को आधा - आधा कर लें क्या

2

दिलों के साफ़ हैं ,सच्चे हैं दोग़ले किरदार
रगों में दौड़ते फिरते हैं दोग़ले किरदार

वफ़ा की बात जो करते हैं दोग़ले किरदार
ख़ुदा का शुक्र वो अपने हैं दोग़ले किरदार

कहाँ- कहाँ से समेटोगो इनको बतलाओ
ये कायनात में फैले हैं दोग़ले किरदार

इन्हीं के दम से महकती है दोग़ली दुनिया
हम इत्र दान में रखते हैं दोग़ले किरदार

तुम्हें ग़ुरूर है, होगा, मगर ये ध्यान रहे
हमारे साथ भी रहते हैं दोग़ले किरदार

रहें न क्यूँ ये हमेशा हमारी पलकों पर
मशक़्क़तों से जो सींचे हैं दोग़ले किरदार

तमाम साज़िशें इनको सलाम करती हैं
बिसात पल में पलटते हैं दोग़ले किरदार

लिबादा ओढ़ के मक्कारियों का दुनिया में
हमेशा फूलते- फलते हैं दोग़ले किरदार

नज़ाकत इनकी तो मशहूर है ज़माने में
लहू भी प्यार से पीते हैं दोग़ले किरदार

कोई भी चाल नहीं चलती सामने इनके
बहुत "ज़हीन" से होते हैं दोग़ले किरदार